D.el.ed I year

सतत एवं व्यापक मूल्यांकन :-

माध्यमिक शिक्षा आयोग 1964-66 ने अनुभव किया कि अब यह मान लिया गया है कि मूल्यांकन एक निरन्तर क्रिया है और शिक्षा प्रणाली का एक अभिन्न अंग है। मूल्यांकन का सीधा सम्बन्ध शिक्षा के उद्देश्य से होता है। मूल्यांकन छात्रों के अध्ययन और अध्यापकों की शिक्षण प्रणाली को बहुत प्रभावित करता है। इस प्रकार मूल्यांकन केवल सफलता अथवा असफलता की जाँच ही नहीं करता, बल्कि शिक्षा में सुधार लाने में भी सहायता देता है। मूल्यांकन द्वारा ऐसे प्रमाण एकत्र किये जाते हैं जिनसे यह प्रमाणित किया जा सके कि छात्रों का विकास वांछनीय दिशा में हो रहा है। इसलिए मूल्यांकन प्रणाली दोषरहित तथा विश्वसनीय होनी चाहिए।

आजकल भारत में मूल्यांकन की प्रचलित (और केवल एकमात्र) प्रणाली लिखित परीक्षा है। स्वाभाविक रूप से नयी मूल्यांकन प्रणाली तब ही स्वीकार की जा सकती है, जब वह लिखित परीक्षाओं को इस प्रकार सुधारे कि शैक्षिक सफलता की जाँच विश्वासपूर्ण और सरल हो जाए।

Scanned with CamScanner

छात्रों की कई प्रकार की उन्नति को लिखित परीक्षाओं द्वारा नहीं मापा जा सकता, अतः जाँच को पूर्ण और विश्वसनीय बनाने के लिए निरीक्षण मौखिक और प्रयोगात्मक परीक्षा जैसे अन्य साधन प्रमाण एकत्र करने के लिए प्रयोग में लाये जाने लगे हैं। छात्रों की सैद्धिक उन्नति अथवा विकास की जाँच करने के लिए मूल्यांकन साधन को सुधारने और विश्वसनीय बनाने की आवश्यता है

यदि परीक्षाएँ वास्तव में महत्वपूर्ण हैं तो उन्हें नयी जानकारियों को ध्यान में रखना होगा और छात्रों के चहुमुखी विकास की जाँच करनी होगी।

सतत तथा व्यापक मूल्यांकन : आधुनिक मूल्यांकन

पद्धतियाँ =

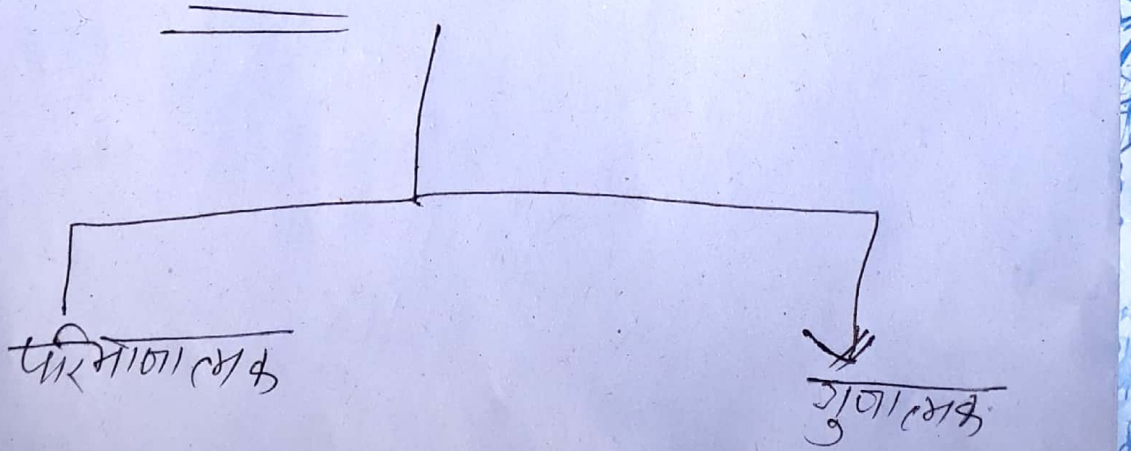

Scanned with CamScanner

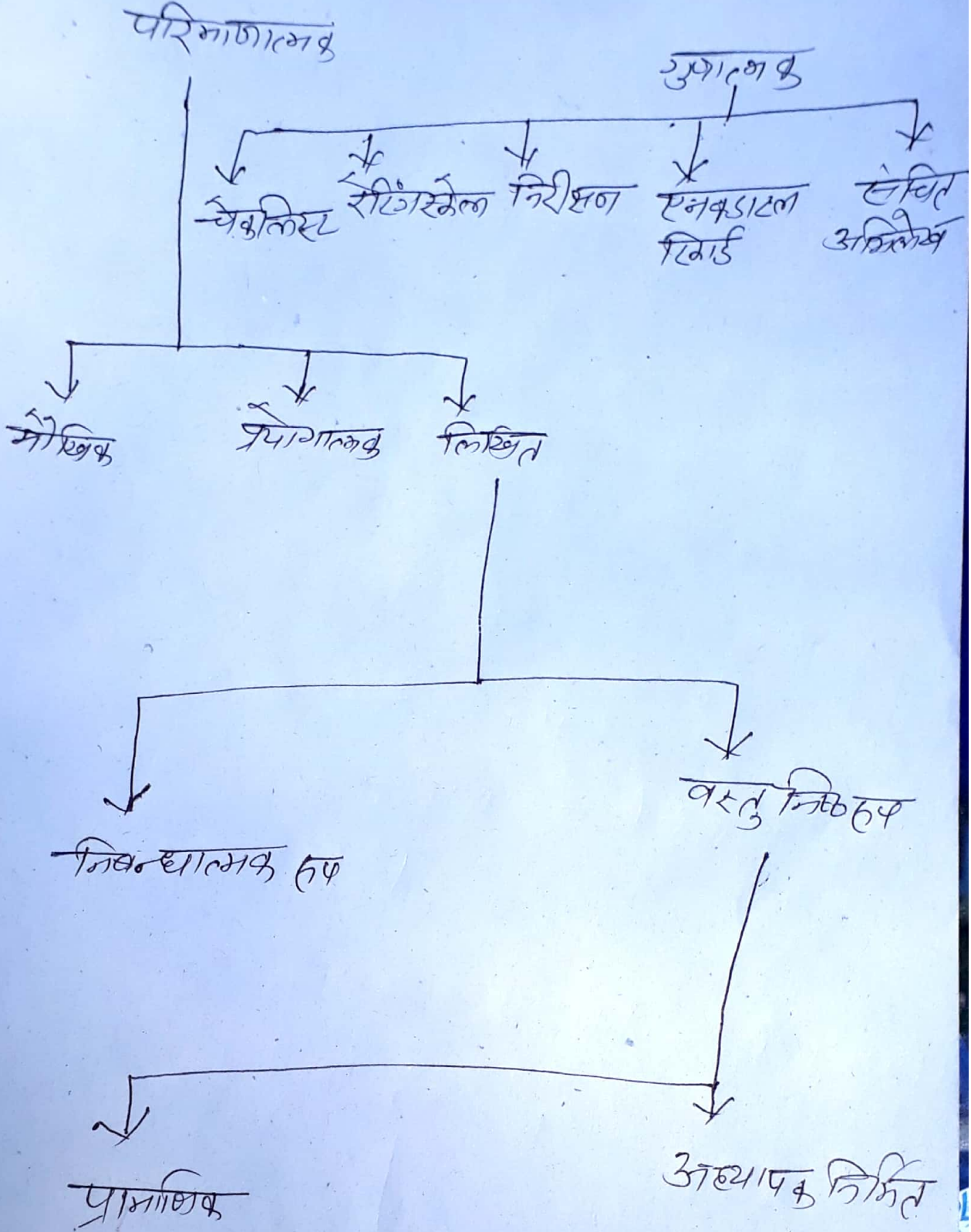

Scanned with CamScanner